विद्यापति की 'पदावली' और शंकरदेव की 'कीर्तन-घोषा' में चित्रित भक्ति एवं श्रृंगार

शोधसारः विश्व साहित्य में भारतीय साहित्य का अन्यतम स्थान है। भारतीय साहित्य का भंडार अनेक महान साहित्यकारों के योगदान के परिणामस्वरूप समृद्धशाली हुआ है। इन्ही लब्धप्रतिष्ठित साहित्यकारों में विद्यापति और शंकरदेव क्रमशः हिंदी और असमीया साहित्य के दो अन्यतम हस्ताक्षर हैं। साहित्यिकता के साथ-साथ सांस्कृतिक और सामाजिक जनजीवन में भी विद्यापति और शंकरदेव की अन्यतम भूमिका रही है। विद्यापति हिंदी साहित्य के संक्रमण काल के कवि रहे, जबकि शंकरदेव असमीया वैष्णव युग या भक्ति काल के। किंतु अपने-अपने क्षेत्रों में दोनों की ही प्रासंगिकता सजीवरूप में विद्यमान हैं। यद्यपि विद्यापति और शंकरदेव ने अनेक रचनाएँ लिखकर भारतीय साहित्य को अमूल्य योगदान दिया है, किंतु दोनों की प्रसिद्धि के पीछे विशेषरूप से 'पदावली' और 'कीर्तन-घोषा' अन्यतम उल्लेखनीय है। 'पदावली' मैथिली भाषा में रचित विद्यापति की अमूल्य रचना है। पदावली ही विद्यापति की लोकप्रियता का मुख्य कारण रही है। ये पदावली श्रृंगार रस से प्लावित और पल्लवित है। श्रृंगार के अतिरिक्त इसमें भक्तिरस का भी चित्रण हुआ है। 'कीर्तन-घोषा' जैसी अमूल्य कृति की रचना शंकरदेव ने एकशरण-नाम-धर्म के प्रचार हेतु असमीया भाषा में लिखी। भगवत भक्ति के लिए शंकरदेव ने जिन घोषा गीतों की रचना की उन्ही का संकलित रूप 'कीर्तन-घोषा' है। भक्ति भावना के अनुपम निदर्शन के साथ ही इसमें श्रृंगार का भी चित्रण द्रष्टव्य है। मैथिल प्रदेश में पदावली जितनी लोकप्रिय है, उतनी ही असमीया भक्तवत्सल जीवन में कीर्तन-घोषा प्रसिद्ध है। दोनों ही कृति में भक्तिभावना और श्रृंगार रस का चित्रण हुआ हैं। अतः यह अत्यन्त विवेचनीय विषय है।

(बीजशब्दः- विद्यापति, शंकरदेव, भक्तिभावना, श्रृंगार)

प्रस्तावनाः हिंदी काव्यधारा के सुदीर्घ इतिहास में 'विद्यापति' एक ऐसे अनोखे व्यक्तित्व तथा कवि के रुप में उभरे जो आज भी मिथिलांचल के लोकमानस में निरंतर बने रहे। उनकी लोकप्रियता सिर्फ मिथिलांचल में ही नहीं, अपितु पूरे हिंदीभाषी क्षेत्र में तथा पूर्ण भारत में व्याप्त रही हैं। विलक्षण प्रतिभा के धनी कवि विद्यापति आदिकाल और भक्तिकाल के काव्यचेतना के संधिकाल के कवि के रूप में जाने जाते है। यद्यपि उनकी अधिकतर रचना संस्कृत में ही हैं, किंतु साथ ही अवहट्ट और मैथिली में उनका समान अधिकार था। 'पदावली' उनकी श्रेष्ठतम रचना मानी जाती है। चौदहवी-पंद्रहवीं शताब्दी में आविर्भूत होकर हिंदी काव्यधारा को मुख्यतः श्रृंगार रस से सराबोर कर देनेवाले कवि विद्यापति का भारतीय साहित्य में उल्लेखनीय स्थान रहा है। वर्तमान समय में 'शंकरदेव' केवल असम या भारतवर्ष में ही प्रसिद्ध नहीं बल्कि विश्व दरबार में उन्हें मानवता के मसीहा का दर्जा दिया जाता है। असमीया नव-नैष्णव धर्म के प्रचारक तथा बहुमुखी प्रतिभा के धनी शंकरदेव का व्यक्तित्व भी असाधारण था। संस्कृत, ब्रजावली और असमीया में रचित उनकी अनेक प्रसिद्ध रचनाओं में 'कीर्तन-घोषा' को श्रेष्ठतम दर्जा दिया जाता है। मूलतः भक्तिप्रधान होने के साथ-साथ कीर्तन-घोषा में श्रृंगार का भी अनुपम निदर्शन दृष्टिगोचर होता है। विद्यापति और शंकरदेव कृत क्रमशः पदावली और कीर्तन-घोषा का महत्व भी कई दृष्टियों से हैं। दोनों ही रचनाएँ अपने-अपने रचयिताओं के प्रतिभा का अन्यतम निदर्शन हैं। प्रांतीय भाषा में रचित दोनों ही कृतियाँ भारतीय साहित्य के लिए अन्यतम दस्तावेज हैं। दोनों कृतियाँ ही वर्तमान समय में जनजीवन के साथ गहरा सम्बन्ध बनाये रखा है।

विश्लेषण एवं निर्वचनः भक्ति और श्रृंगार दोनों प्रवृत्तियाँ मध्यकालीन भारतीय साहित्य में पाई जाती हैं। भक्ति और श्रृंगार दोनों का स्वरूप तथा अभिव्यंजना अलग अलग रूप में पाई जाती है। दोनों की परिभाषाएँ भिन्न हैं। विद्यापति और शंकरदेव की अन्यतम रचनाएँ क्रमशः पदावली और कीर्तन-घोषा में भी भक्ति तथा श्रृंगार का अनुपम चित्र विद्यमान है। जिसका अध्ययन विश्लेषण ही प्रस्तुत पत्र का मुख्य ध्येय है। उसके पूर्व 'पदावली' और 'कीर्तन-घोषा' के बारे में संक्षिप्त परिचय निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया हैः-

पदावली और कीर्तन- घोषा का परिचयः

 Copyright ⓒ 2020 Authors

पदावली: संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित विद्यापति ने संस्कृत में 13 रचनाएँ की। किंतु 'देसिल बयाना सब जन मिट्ठा'[1] कहकर जनभाषा में समय समय पर जो पद गाते रहे, उसीका संग्रहीत रूप पदावली के कारण कवि विद्यापति की ख्याति दूर दूर तक फैली। जीवनकाल में ही विद्यापति की प्रसिद्धि तथा भरपुर लोकप्रियता मिली, जिसका प्रमुख श्रेय उनकी एकमात्र अक्षय कृति पदावली हैं। गीत- गोविंद के रचयिता जयदेव को आदर्श मानकर ही पदावली की रचना करने के कारण विद्यापति की पदावली भी कोमलकांत मधुर तथा अनुपम रचना बन पड़ी। मैथिली भाषा में रचित पदावली की रचनाधर्मिता, कोमलकांत मधुर तथा गेयता के कारण विद्यापति को अभिनव जयदेव, मैथिल-कोकिल, कवि-कंठाहार आदि भिन्न नामों से विभुषित किया गया है। पदावली केवल विद्यापति की ही कीर्तिस्तम्भ नहीं वरन यह हिंदी साहित्य के लिए भी अमूल्य वरदान है। विद्यापति की पदावली का आदर राजमहलों से लेकर कुटिया तक समान रूप से होता आया है। जहाँ तक विद्यापति की पदावली के पदों की संख्या का प्रश्न हो, उसका निश्चित उत्तर दे पाना दुरूह कार्य हे। पदावली के पदों का संकलन कार्य अब तक अनेक विद्वानों द्वारा हो चुका हैं। ग्रियर्सन के बाद डॉ नगेन्द्रनाथ गुप्त ने 'विद्यापति की पदावली' 935 पदों की संख्या में प्रकाशित किया। इसी आधार पर अन्य लेखकों द्वारा विद्यापति के पद संग्रहित कर प्रकाशित की गई। गुप्त के बाद सबसे प्रामाणिक खगेंद्रनाथ मिश्र और विमानबिहारी मजुमदार ने 939 पद प्रकाशित किये। इसमें गुप्तजी के 203 पद को छोड़कर 207 नये पद मिश्र-मजुमदार ने जोड़े। वैसे गुप्त मान्य 935 पदों के साथ यदि मिश्र-मजुमदार के 207 नये पद जोड़े जाए तो इसकी संख्या 1142 होती हैं। बिहार राष्ट्र परिषद द्वारा तीन खण्डों में विद्यापति पदावली का प्रकाशन योजना एक सफल तथा उल्लेखनीय बात है। जिनमें दो खण्ड प्रकाशित हो चुके हैं। इस आधार पर भी पदावली की संख्या लगभग 1142 ही ठहरती हैं। विषय की दृष्टि से पदावली में एकसूत्रता नहीं हैं। विषय की दृष्टि से इसे तीन प्रमुख भागों में बाँटा जा सकता है- भक्ति, श्रृंगार और विविध विषयक।

कीर्तन-घोषाः- बहुमुखी प्रतिभा के धनी तथा विशिष्ट व्यक्तित्व के अधिकारी महापुरूष शंकरदेव की अक्षय कृति हैं कीर्तन-घोषा। शंकरदेव ने एकशरण-नामधर्म के प्रचार हेतु समय-समय पर जिन घोषा गीतों की रचना की थी, उन्हीका संकलित रूप कीर्तन-घोषा है। शंकरदेव के देहावसान के बाद उनके प्रिय शिष्य माधवदेव अपने भांजे रामचरण ठाकुर द्वारा विभिन्न सत्रों से कीर्तन-घोषा का संकलन संपादन कार्य कराया।भांजे रामचरण ठाकुर की प्रशंसा में माधवदेव कहते है-

मोर गुरूजने गोटाव दिछिल, मई नुयाइँलो, गुरूवाक्य परि आछिल सार्थक, भागिन धन, गुरूवाक्य राखिले मोर।[2]

(अर्थात माधवदेव के गुरू शंकरदेव ने उन्हे यह काम सौंपा था, पर वह कर न सकें। पर भांजे रामचरण ने इस कार्य को पूरा कर गुरू के सामने उनी मान रख लिया।)

सत्रों तथा नामघरों में संकीर्तन करने के लिए इन घोषा पदों को सामुहिक गान किया जाता है। भक्तजन बड़े ही आदर तथा श्रद्धापूर्वक इन गीतों का संकीर्तन करते हैं। कीर्तन-घोषा में 29 खण्डों के अंतर्गत 189 कीर्तन हैं, जिनकी छंद सख्याएँ 2,384 हैं। कीर्तन-घोषा में संकलित 29 खण्ड इसप्रकार हैं- चतुर्विंशति अवतार वर्णन, नामापराध, पाषण्ड मर्दन, ध्यानवर्णन, अजामिलोपाख्यान, प्रह्लाद चरित्र, गजेंद्रपाख्यान, हरमोहन, बलिछलन, शिशुलीला, कालीय दमन, रास-क्रीड़ा, कंसवध, गोपी-उद्धव संवाद, कुजीर बांछा पुरण, अक्रुरर बांछा पुरण, जरासंध युद्ध, कालयवन वध, मुचुकंद स्तुति, स्यामंत हरण, नारदर कृष्णदर्शन, विप्र पुत्र आनयन, दामोदर विप्रोपाख्यान, देवकी पुत्र आनयन, वेद स्तुति, लीला-माला, श्रीकृष्णर वैकुण्ठ प्रयाण, ऊरेषा वर्णन और भागवत तात्पर्य वर्णन ।शंकरदेव ने श्रीमदभागवत, गीता, पद्मपुराण, ब्रह्मपुराण आदि शास्त्रों-ग्रंथों के सार तत्व को ग्रहण कर उसीके आधार पर अपनी मौलिक प्रतिभा के बल पर कीर्तन-घोषा की रचना की।

पदावली और कीर्तन-घोषा में चित्रित भक्ति और श्रृंगार

 Copyright ⓒ 2020 Authors

पदावली और कीर्तन-घोषा में चित्रित भक्ति भावनाः- 'भक्ति' शब्द की व्युत्पत्ति 'भज' धातु से हुई है, जिसका अर्थ है 'सेवा करना' या 'भजना'। अर्थात प्रेमपुर्वक अपने इष्ट के प्रति समर्पण भाव ही भक्ति है। साहित्य मनीषियों के समक्ष विद्यापति बहुत विवाद का विषय रहे है। इनके काव्यसंसार को देखकर विद्वानों में किसी ने इन्हें भक्त कहा तो किसी ने श्रृंगारी। पदावली के आधार पर यदि विद्यापति के काव्यसंसार को बाँटे तो राधा-कृष्ण विषयक ज्यादातर गीत श्रृंगारिक हैं, पर जो भक्ति विषयक गीत हैं, उनमें प्रमुख हैं- कृष्ण वंदना, गंगा स्तुति, देवी वंदना, शिव स्तुति, कृष्ण प्रार्थना आदि। विद्वानों के मतों के अतिरिक्त विद्यापति को भक्त सिद्ध करनेवाली अनेक दंतकथाएँ जनश्रुतियाँ आदि भी प्रचलित हैं। इसके साथ ही विद्यापति का लिखा हुआ भक्ति संबंधी प्रचुर साहित्य है। अनेक विद्वान विद्यापति को शैव या शाक्त मानते है। किंतु उन्हें वैष्णव कहनेवाले और कृष्ण भक्त के रूप में देखलेवाले आज भी अपने आग्रह पर दृढ़ हैं।

डा. जयनाथ नलिन के अनुसार- 'भाषा और भावों की सूक्ष्मता, प्रांजलता, गहनता और सघनता के विकास क्रम की कसौटी माने तो क्रमशः शैव, शाक्त और वैष्णव धर्म की ओर उनका अग्रसर होना निश्चित होता है।'[3] इतना ही नहीं डा. नलिन को विद्यापति के काव्य में कृष्ण भक्ति के स्वर्ण सरोज दिखाई देते हैं।

पदावली भक्ति विषयक पदों के संदर्भ में आनंद प्रकाश दीक्षित के अनुसार- 'भक्ति के क्षेत्र में विद्यापति किसी भी सम्प्रदाय से नहीं जुड़ते। कृष्ण, शिव, शक्ति, गंगा आदि सभी के प्रति आत्मनिवेदन करते हैं।'[4]

जीवन के अंतिम काल में कविवर विद्यापति ने पदावली में संसार की स्वार्थपरकता और आत्मग्लानि का चित्रण इसप्रकार किया है । एक उदाहरण निम्नलिखित है-

जतने जतेक धन पाये बटोरलु, मिलि मिलि परिजन खाए ।
मरनक बेरि हरि केओ नहिं पूछत करम संग चलि जाए ।।
तुअ रद परिहरि पाप- पयोनिधि, पारक कओन उपाए ।। [5]

यहाँ विद्यापति यह स्पष्ट कहते हैं कि- 'अब केवल भगवान के चरणों का ही सहारा है। अन्यथा और कोई उपाय नहीं ।'

संसार सुख की क्षणभंगुरता का बोध होने पर विद्यापति अपनी व्यथा का चित्रण करते हुए भगवान की प्रार्थना इसप्रकार करते है, उदाहरणस्वरूपः-

माधव, कि कहब तिहरो गेआन ।
सुपहु कहल जब रोष कएल तब तकें मुँनल दुहु कान ।। [6]

पश्चाताप करते हुए भगवान के प्रति कवि की अनन्य भक्ति और दैन्यतापूर्ण हृदयोद्गार का वर्णन पदावली में कई जगह द्रष्टव्य हैं। पदावली में देवाधिदेव शंकर की अर्द्ध नारीश्वर रूप का वर्णन कर अत्यन्त सजीव चित्रण कर विद्यापति ने शिव की वंदना की हैं, उदाहरणस्वरूपः-

जय जय संकर, जय त्रिपुरारि। जय अध पुरूष जयति अध नारि।।
आध धबल तनु आधा गोरा। आध सहज कुच आध कटोरा।।
आध हड़माल आध गजमोति। आध जानन सोह आध बिभूति।।
आध चेतन मति आध भोरा। आध पटोर आध मुँजडोरा।।[7]

इसीप्रकार 'कनक भूधर वासिनी' पद में आदि शक्ति दुर्गा की वंदना कर कवि ने आदिशक्ति दुर्गा में ब्रह्मा, विष्णु, महेश की त्रिगुणात्मक स्वरूप की कल्पना की दैं। उसीप्रकार गंगा स्तुति कर सारे पापों का नाश करनेवाला बताया हैं। शिव के विचित्र वेश में गौरी को विवाह कराने आने का वर्णन पदावली के नचारियों के रूप में द्रष्टव्य हैं।

 Copyright © 2020 Authors

पंद्रहवीं शताब्दी में समग्र भारतवर्ष में भक्ति आंदोलन का प्रभाव पूर्णरूप से हुआ था। तत्कालीन समय में असम में शंकरदेव ने इसी से प्रभावित होकर नववैष्णव धर्म प्रवर्तन कर इसका प्रचार तथा प्रसार किया। जिसका मूल मंत्र था- 'एक देव, एक सेव,एक विने नाई केव।' कृष्ण को विष्णु के पूर्ण अवतार मानकर शंकरदेव ने- "कृष्णंतु भगवान स्वयम" प्रतिष्ठा की है। कीर्तन-घोषा शंकरदेव की भक्तिसाधना का सर्वश्रेष्ठ निदर्शन है। कीर्तन-घोषा कथात्मक भक्ति काव्य है। कलिकाल में नामधर्म को ही युगधर्म के रूप में स्वीकार किया गया है, जिससे भक्ति के श्रेष्ठ स्वरूप का प्रकाशन देखने को मिलता है। कीर्तन-घोषा में अवतार तत्व, वेदांत दर्शन, निष्काम भक्ति, दास्य-भाव, सत्संग-महिमा, माया से उद्धार हेतु भक्ति की प्रयोजनीयता, भगवान का भक्तवत्सल रूप, शिशु कृष्ण की बाल लीला, अजामिल जैसे पापी का उद्धार आदि विषयक कीर्तन के गीत पुष्ट हुए है।

'प्रथमे प्रणामो ब्रह्मरूपी सनातन सर्व अवतारर कारण नारायण'[8] - कहकर 'चतुर्विंशति अवतार' तत्व का वर्णन कर भगवान के अद्वेतवाद स्वरूप और महिमा का वर्णन किया है । एकशरण धर्म के मूलतत्व को 'नामापराध' में दिखाकर हरिनाम के महत्व को बताया है । उदाहरणस्वरूप-

"नामत यतन करा हरिषि।
नामेसे करिबे परम सिद्धि।।[9]

अर्थात हरिनाम लेने से परम सिद्धि प्राप्त होती है। हरिनाम के महत्व को बार-बार वर्णन करने में शंकरदेव थकते नहीं है, वे कहते है-

आगम पुराण जत वेदांतरो ताथ्पर्य
जानि करा भकतिर सार।
श्रवण कीर्तन बिना आन पूण्य नापाय जाना
इटो घोर संसारर पार ।।[10]

कीर्तन-घोषा के संदर्भ में डा. बेजबरूवा का कथन है-

'कि उच्च भाव, कि उच्च प्रार्थना, कि स्तुति, कि शोक, सकलो वर्णनाते शंकरदेवे मुधा फुटाई गईछे। शंकरदेवे यदि आन पुथि रचना नकरिलेहेतेन, तथापि कीर्तन-घोषार बाबेई तेऊ जगतत अमर हई थाकिलहेतेन'[11]। यहाँ कीर्तन-घोषा की रचनाधर्मिता, भक्तिभावना एवं भावसौंदर्य को उच्चतर बताते हुए डा. बेजवरूवा ने कीर्तन-घोषा को शंकरदेव की अमर कीर्ति माना है।

साम्यः

क) पदावली और कीर्तन-घोषा में दास्य-भक्ति तथा आत्मसमर्पण का निदर्शन हमें इसप्रकार देखने को मिलता है-

विद्यापति की पदावली का एक उदाहरण निम्नलिखित है-

माधव बहुत मिनति कर तोहि ।
दए तुलसी तिल देह समरपल, दया जनि छाड़व मोहि ।।
भनई विद्यापति अतिशय कातर, तरइते ई भव-सिंधु ।।
तुअ पद-पल्लव केर अवलंबन, तिला एक देह दिनबंधु ।।[12]

इसीप्रकार शंकरदेव ने कीर्तन-घोषा के 'प्रह्लाद चरित्र' में वर्णन किया है, एक उदाहरण निम्नलिखित है-

श्रवण कीर्तन स्मरण विष्णुर

 Copyright ⓒ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-1 No. 3 January–December 2020

अर्चन पद सेवन ।
दास्य सखित्व वंदन विष्णुर
करिब देहा अर्पन ।। [13]

ख) विद्यापति भी कृष्ण को परब्रह्म मानते हैं, वह अवतार नहीं, परब्रह्म अवतारी हैं, माना है । शंकरदेव ने भी भगवान को अवतारी रूप में चित्रण किया है।

वैषम्य:

क) विद्यापति की पदावली की तुलना में शंकरदेव की कीर्तन-घोषा में भक्तिप्रधान पद अधिकतर हैं।

ख) विद्यापति ने पदावली में शिव, गंगा, दुर्गा, कृष्ण सभी की वंदना किया हैं । परंतु शंकरदेव की कीर्तन-घोषा में विष्णु के अवतार कृष्ण का ही वर्णन है।

पदावली और कीर्तन-घोषा में चित्रित श्रृंगार भावना:- श्रृंगार (श्रृंगपूर्वक त्र धातु + अण) शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है- 'श्रृंग' और 'आर'। 'श्रंग' का अर्थ है कामोद्रेक अथवा काम की वृद्धि तथा आर का अर्थ है कामवृद्धि की प्राप्ति। कुल मिलाकर श्रृंगार शब्द कामवासना की संवृद्धि अथवा प्राप्ति का प्रतीक है। श्रृंगार का स्थायी भाव है रति। भारतीय सारित्य में कवि, साहित्यकारों ने खुब रमकर श्रृंगार की दोनों अवस्थाओं (संयोग और वियोग) का चित्रण किया है। यह श्रृंगार ही रसों का राजा कहलाता है।

विद्यापति संस्कृत साहित्य और भारतीय काव्यशास्त्र के निष्णात पंडित थे। रससिद्ध कवि विद्यापति ने भी श्रृंगार के क्षेत्र में प्रवेश किया तो उसका कोई भी कोना अछूता नहीं छोड़ा। विद्यापति की पदावली में श्रृंगार अपने चरमोत्कर्ष को पहुँचा है। विद्यापति ने अपने नायक-नायिका के रूप में राधा और कृष्ण को चुना। विद्यापति ने श्रृंगार के दोनों पक्षों- संयोग और वियोग का पूर्णरूपेण कुशलतापूर्वक चित्रण किया। विद्यापति की पदावली राधा-कृष्ण के प्रेम-प्रसंगों का अपूर्व तथा अक्षय भंडार है। संयोग श्रृंगार में रूप वर्णन प्रधान होता है। नख-शिख, वेश-भूषा, आकृति-प्रकृति आदि की चर्चा होती है। विद्यापति ऐसे चित्रण में पारगंत है। एक उदाहरण निम्नलिखित हैं-

पल्लवराज चरनजुग सोभित
गति गजराज क भाने ।
कनक कदलि पर सिंह समारल
ता पर मेरू समाने ।।
मेरू उपर दूइ कमल फुलायल
नाल बिना रूचि पाई ।
मनिमय हार धार बहु सुरसरि
तओ नहीं कमल सुखाई ।।
अधर बिम्बसन दसन दाड़िम बिजु
रवि ससि उगथिक पासे ।
राहु दूर बस नियरो न आवथि
तैं नहिं करथि गरासे ।। [14]

इसप्रकार विद्यापति ने श्रृंगार रस के विकास की सभी अवस्थाओं जैसे- वय:संधि, नायिकाओं का मुग्धा, परकीया, अज्ञातयौवना, मानिनी, वासकसज्जा, दिवाभिसारिका, कृष्णाभिसारिका आदि रूपों में वर्णन किया हैं। राज-दरबार के विलासितापूर्ण वातावरण में श्रृंगारिक पदों की मांग के अनुसार श्रृंगार के शिरोमणि कवि विद्यापति

Copyright © 2020 Authors

ने श्रृंगार रस का सर्वांगपूर्ण स्थितियों का वर्णन किया हैं। मिलन इंद्रिय का आग्रह है तो विरह आत्मा की हृदय की पुकार। विद्यापति ने पदावली में प्रेम के वियोग पक्ष का भी अनुपम रूप में चित्रण किया है। वियोग दशा का एक अत्यन्त मार्मिक उदाहरण निम्नलिखित है –

'माधव' कत परबोधब राधा ।
हा हरि हा हरि कहतहि बेरि बेरि
अब जिउ करब समाधा ।।
धरनि धरिये धनि जतनहि बइसइ ।
पुनहि उठए नहिं पारा ।
सहजहि बिरहिन जण मँहे तापिनि ।
बोरि मदन- सर- धारा ।। [15]

शंकरदेव की कीर्तन-घोषा मूलतः भक्तिप्रधान काव्य है, परंतु इसमें श्रृंगार रस का निरूपण भी हमें प्रमुखरूप से कीर्तन-घोषा के तीन खण्डों में देखने को मिलता हैं – गजेंद्रोपाख्यान, हरमोहन और रासक्रीड़ा में।

कीर्तन-घोषा के 'रासक्रीड़ा' का एक उदाहरण निम्नलिखित है –

बाहु मेलि काको आलिंगि धरि ।
कारो स्तन नखे पररो हरि ।।
मुख साया कारो तोलंत हास ।
मातंत काको करि परिहासा ।।
लंत वस्त्र काढ़ि बढ़ाया रंग ।
बेकत करंत गुपुत अंग ।। [16]

'हरमोहन' खण्ड में चित्रित संयोग श्रृंगार का एक अनुपम उदाहरण प्रस्तुत है –

प्राणजाय शंकरर काम उतपाते ।
महावेगे खोपात धरिल वामहाते ।।
रह प्राणेश्वरी बुलि करि आलिंगन ।
महाकाम भोले दिल मुखत चुम्बन ।। [17]

यहाँ शंकर भगवान के विष्णु भगवान के मोहिनी रूप को देखकर कामपीड़ा में दग्ध एक कामुक के रूप में अत्यन्त उद्दाम चित्रण कवि शंकरदेव ने किया है।

इसप्रकार हम देखते हैं कि शंकरदेव ने कीर्तन-घोषा में भक्ति के साथ-साथ श्रृंगार का चित्रण एक रससिद्ध साहित्यकार की भांति ही किया है।

साम्यः-

क) श्रृंगार का स्थायी भाव है 'रति'। विद्यापति की पदावली और शंकरदेव की कीर्तन-घोषा में श्रृंगार की पूर्ण परिपाक से चित्रण द्रष्टव्य हैं। रूप-वर्णन, रति-क्रीड़ा आदि का दोनों ही कृतियों में चित्रण हुआ है।

ख) विद्यापति ने पदावली में श्रृंगार वर्णन के लिए नायक-नायिका के रूप में कृष्ण और राधा को लिया। शंकरदेव ने भी राधा-कृष्ण के प्रेम प्रसंग का चित्रण किया है।

 Copyright © 2020 Authors

ग) विद्यापति और शंकरदेव कृत क्रमशः पदावली और कीर्तन-घोषा की एक और निराली विशेषता मिलती है, वह है - इसकी 'लोकोन्मुखता'। दोनों कवियों ने ही अपनी अपनी रचनाओं में लोक-जीवन एवं ग्रामीण परिवेश की विविध घटनाओं, परिघटनाओं को प्रसंगवशः अपनी मौलिक प्रतिभा से चित्रण किया हैं। लोकमानस में प्रेमी-प्रेमिका जिसप्रकार प्रेमावेग में तल्लीन होते है, एक-दूसरे को पाने के लिए व्यग्र रहते है, कामपीड़ा आदि पदावली और कीर्तन-घोषा में अनुपम चित्रण किया गया है।

वैषम्यः-

क) विद्यापति ने पदावली में संयोग के साथ वियोग दशा का भी चित्रण किया है। जबकि शंकरदेव ने संयोग की अपेक्षा वियोग की अवस्थाओं का चित्रण नहीं किया।

ख) शंकरदेव ने केवल कीर्तन-घोषा के तीन खण्डों में ही श्रृंगार रस का चित्रण किया है। उस अनुपात में पदावली में विद्यापति ने श्रृंगार रस का चित्रण प्रचुर मात्रा में किया हैं।

निष्कर्षः- उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम यह निष्कर्षरूप में कह सकते हैं कि - विद्यापति और शंकरदेव दोनों ही विलक्षण प्रतिभा के अधिकारी दो विरल व्यक्तित्व थे। विद्यापति और शंकरदेव की क्रमशः 'पदावली' और 'कीर्तन-घोषा' दोनों ही अपनी अपनी खास स्वरूप, खास रंग-ढंग रखनेवाली भारतीय साहित्य की दो अमूल्य कृतियाँ हैं। भक्ति हो या श्रृंगार दोनों ही दृष्टियों से पदावली और कीर्तन-घोषा में चाहे अधिक हो या कम मात्रा में चित्रण उत्कृष्ट रूप में हुआ हैं। साहित्यिकता की दृष्टि से दोनों ही कृतियाँ उच्च कोटि की अन्यतम रचनाएँ हैं। अतः भक्तिभावना और श्रृंगारभावना से ओतप्रोत पदावली और कीर्तन-घोषा का अपने अपने प्रांत तथा भारतीय जनमानस में महत्वपूर्ण स्थान रहा हैं।

संदर्भ-सूचीः

1. बेनीपुरी रामवृक्ष, विद्यापति पदावली, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2011, पृष्ठ-16
2. मजुमदार तिलकचन्द्र, श्रीमंत शंकरदेवः साहित्य संस्कृतिर जिलिंगनि, वनलता प्रकाशन, गुवाहाटी, 2014, पृष्ठ-62
3. दीक्षित आनंदप्रकाश, विद्यापति, साहित्य प्रकाशन मंदिर, ग्वालियर, पृष्ठ-55
4. वहीं, पृष्ठ-61
5. विद्यापति पदावली, पृष्ठ-156
6. वहीं, पृष्ठ-156
7. वहीं, पृष्ठ-150
8. भवजित वायन, सर्वभारतीय भक्ति आंदोलन आरू शंकरदेवर कीर्तन-घोषा, पाहि प्रकाशन, गुवाहाटी, 2014, पृष्ठ-110
9. गोस्वामी यतीन्द्रनाथ, कीर्तन-घोषा आरू नाम-घोषा, ज्योति प्रकाशन, गुवाहाटी, 1989, पृष्ठ-14
10. सर्वभारतीय भक्ति आंदोलन आरू शंकरदेवर कीर्तन-घोषा, पृष्ठ-111
11. वहीं, पृष्ठ-109
12. कपूर शुभकार, विद्यापति की पदावली, गंगा पुस्तकालय कार्यालय, लखनऊ, 1968, पृष्ठ-415
13. सर्वभारतीय भक्ति आंदोलन आरू शंकरदेवर कीर्तन-घोषा, पृष्ठ-111
14. विद्यापति पदावली, पृष्ठ-41
15. वहीं, पृष्ठ-144

 Copyright ⓒ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-1 No. 3 January–December 2020

16. कीर्तन-घोषा आरू नाम-घोषा, पृष्ठ-206

17. वहीं, पृष्ठ-134 ।

प्रस्तुतकर्ता

बर्णाली बैश्य।
शोधार्थी (पी.एच.डी), हिंदी विभाग।
गौहाटी विश्वविद्यालय, असम।

+++ XXX +++

Copyright © 2020 Authors